विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयपस णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियाओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सुहुमेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। बादरेइंदियपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। सेसाणि सत्त पदाणि विसेसाहियाणि णेदव्वाणि✻। बेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ

गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम वा गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिवन्ध संख्यातगुणा है। शेष सात पद विशेष अधिक क्रमसे ले जाना चाहिये। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके

✻ अप्रतौ 'विसेसाहियाणि त्ति णेदव्वाणि' इति पाठः।

ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सेसाणि तिण्णि पदाणि णेदव्वाणि । तेइंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । एवं सेसदोपदाणि विसेसाहियकमेण णेदव्वाणि । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । (१) तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ * ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । बेइंदियपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । चउरिंदियपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव अपज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबंध विशेष अधिक है : उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । इसी प्रकार शेष तीन पदोंको ले जाना चाहिये ।

आगे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्यस्थितिबन्ध विशेष अधिक है । इसी प्रकार शेष दो पदोंको भी विशेषाधिकके क्रमसे ले जाना चाहिये । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके आयुका स्थितिबन्ध---

---

(१) वाक्यमिदं नोपलभ्यत अ-आ-काप्रतिषु । * ताप्रतौ ' चदुण्णं क० उक्क० (जह०) इति पाठः ।

सण्णिपंचिदियपज्जत्ताणमाउअस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चउरिंदियपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहियाओ। तस्सेव पज्जत्ताणं चउण्णं कम्माणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तेइंदियपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। चउरिंदियपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। असण्णिपंचिदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। असण्णिपंचिदियपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं

स्थानविशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। असंज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध

जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणमुक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। असण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव पज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव पज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं जहण्णओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। तस्सेव अपज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ। ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि। उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ। तस्सेव अपज्जत्ताणं मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखे-

---

विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यात-गुणा है। उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका जघन्य स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। उसीके अपर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थानविशेष विशेष अधिक है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक है। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके अपर्याप्तकके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं। उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है। उसीके पर्याप्तकके नाम व गोत्रका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है। स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष

ज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्ताणं णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ तस्सेव पज्जत्ताणं चदुण्णं कम्माणं ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो विसेसाहिओ । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि । उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ । तस्सेव पज्जत्तयस्स मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणविसेसो संखेज्जगुणो । ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि एगरूवाहियाणि उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ ।

सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स✡ संकिलेसविसोहिट्ठाणाणि ।५१।

स्थितयो बध्यन्ते एभिरिति करणे घञुत्पत्तेः♠ कर्मस्थितिबन्धकारणपरिणामानां स्थितिबन्ध इति व्यपदेशः । तेषां स्थानानि अवस्थाविशेषाः स्थितिबन्धस्थानानि । संपहि तेसिं ट्ठिदिबंधकारणपरिणामाणं परूवणा कीरदे । किमट्ठमेदेसिं परूवणा कीरदे? कारणावगमदुवारेण कम्मट्ठिदिकज्जावगमणट्ठं । ण च कारणे अणवगए कज्जावगमो सम्मत्तं पडिवज्जदे, अण्णत्थ तहाणुवलंभादो ।

एत्थ परूवणा पमाणमप्पाबहुअमिदि तिण्णि अणुयोगद्दाराणि भवंति । सुत्ते

अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है । उसीके पर्याप्तकके चार कर्मोंका स्थितिबन्धस्थान बिशेष विशेष अधिक है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक हैं । उसीके पर्याप्तकके मोहनीयका स्थितिबन्धस्थानविशेष संख्यातगुणा है । स्थितिबन्धस्थान एक रूपसे विशेष अधिक हैं । उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सबसे स्तोक हैं ।। ५१ ।।

'जिनके द्वारा स्थितियां बंधती हैं' इस विग्रहके अनुसार करण अर्थमें 'घञ्' प्रत्यय होनेसे स्थितिबन्धके कारणभूत परिणामोंको स्थितिबन्ध कहा गया है । उनकी अवस्थाविशेषोंका नाम स्थितिबन्धस्थान हैं । अब स्थितिबन्धके कारणभूत उन परिणामोंकी प्ररूपणा करते हैं ।

शंका- इनकी प्ररूपणा किसलिये की जाती है ?

समाधान- कारणपरिज्ञानपूर्वक कर्मस्थिति रूप कार्यका परिज्ञान करानेके लिये उनकी प्ररूपणा की जा रही है । कारण कि जबतक कार्योत्पादक हेतुका परिज्ञान नहीं हो जाता, तब तक कार्यका परिज्ञान यथार्थताको प्राप्त नहीं होता, क्योंकि, दूसरी जगह वैसा पाया नहीं जाता है :

यहां प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व ये तीन अनुयोगद्वार हैं ।

✡ अ-आ-काप्रतिषु 'पज्जत्तयस्स' इति पाठः । ♠ अ-आ-काप्रतिषु 'घञुत्पत्ते' इति पाठः ।

अप्पाबहुआणुयोगद्दारमेक्कमेव किमट्ठं परूविदं ? ण एस दोसो, अप्पाबहुअपरूवणाए तेसिं दोण्हं पि अंतब्भावादो । कुदो ? अणवगयसंत-पमाणेसु परिणामेसु अप्पाबहुगाणुववत्तीदो । तत्थ ताव एगजीवसमासमस्सिदूण संकिलेस विसोहिट्ठाणाणं परूवणा कीरदे । तं जहा- जहण्णियाए ट्ठिदीए अत्थि संकिलेसट्ठाणाणि एवं बिदियाए ट्ठिदीए वि अत्थि संकिलेसट्ठाणाणि णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदि त्ति । एवं विसोहिट्ठाणाणं पि परूवणा कायव्वा । णवरि उक्कस्सट्ठिदिप्पहुडि परूवेदव्वं । एवं परूवणा गदा ।

जहण्णियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणं पमाणमसंखेज्जा लोगा । बिदियाए ट्ठिदीए वि असंखेज्जा लोगा । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति । एवं विसोहिट्ठाणाणं पि विवरीएण पमाणपरूवणा कायव्वा । पमाणाणुयोगद्दारेण सूचिदाणं सेडि-अवहार-भागाभागाणं परूवणं कस्सामो । तत्थ सेडिपरूवणा दुविहा-अणंतरोवणिधा परंपरोवणिधा चेदि । तत्थ अणंतरोवणिधाए जहण्णट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणेहिंतो बिदियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि विसेसाहियाणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । बिदियट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणेहिंतो तदियट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणाणि

शंका— सूत्रमें एक मात्र अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारकी ही प्ररूपणा किसलिये की गई है ?

समाधान— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वे दोनों अल्पबहुत्व प्ररूपणाके अन्तर्गत हैं। कारण यह कि सत्त्व और प्रमाणके अज्ञात होनेपर उक्त परिणामोंके विषयमें अल्पबहुत्वकी प्ररूपणा सम्भव नहीं है।

उनमें पहिले एक जीवसमासका आश्रय लेकर संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी प्ररूपणा की जाती है। यथा— जघन्य स्थितिमें संक्लेशस्थान हैं। इस प्रकार द्वितीयादि स्थितिमें भी संक्लेशस्थानोंको उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये। इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंकी भी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि उनकी प्ररूपणा उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर करना चाहिये। प्ररूपणा समाप्त हुई।

जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक है। द्वितीय स्थितिके भी संक्लेशस्थानोंका प्रमाण असंख्यात लोक ही है। इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक ले जाना चाहिये। इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंके भी प्रमाणकी प्ररूपणा विपरीत क्रमसे करना चाहिये।

यहां प्रमाणाणुयोगद्वारसे सूचित श्रेणि, अवहार और भागाभागकी प्ररूपणा करते हैं। उनमें श्रेणिप्ररूपणा दो प्रकार है— अनन्तरोपनिधा और परम्परोपनिधा। उनमें अनन्तरोपनिधाकी अपेक्षा — जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंसे द्वितीय स्थितिके संक्लेशस्थान विशेष अधिक हैं। प्रतिभाग क्या है ? प्रतिभाग पल्योपमका असंख्यातवां भाग है। द्वितीय स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा तृतीय स्थितिके संक्लेशस्थान विशेष

विसेसाहियाणि । एत्थ पडिभागो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एवमणंतरोवणिधा गदा ।

परंपरोवणिधाए जहण्णट्ठिदिसंकिलेसट्ठाणेहिंतो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाग-मेत्तद्धाणं गंतूण दुगुणवड्ढी होदि । पुणो वि एत्तियमद्धाणमुवरि गंतूण चदुग्गुणवड्ढी होदि । एवं णेयव्वं जाव उक्कस्सट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एत्थ णाणागुणहाणि-सलागाओ थोवाओ । एगगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं । एवं विसोहिट्ठाणाणं पि सेडिपरूवणं विवरीदकमेण कायव्वं, उक्कस्सट्ठिदिविसोहिपरिणामेहिंतो हेट्ठिम-हेट्ठिमट्ठि-दिपरिणामाणं विसेसाहियत्तुवलंभादो । एवं सेडिपरूवणा गदा ।

अवहारो उच्चदे । तं जहा—सव्वसंकिलेसट्ठाणाणि जहण्णट्ठिदिसंकिलेसपमाणेण अवहिरिज्जमाणे केवचिरेण कालेण अवहिरिज्जंति? असंखेज्जेण कालेण अवहिरि-ज्जंति । एवं णेदव्वं जाव उक्कस्सियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एवं विसोहिट्ठाणाणं पि वत्तव्वं । अवहारो गदो ।

जहण्णियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि सव्वसंकिलेसट्ठाणाणं केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो । एव णेदव्वं जाव उक्कस्सियाए ट्ठिदीए संकिलेसट्ठाणाणि त्ति । एवं विसोहिट्ठाणाणं ❀ **भागाभागपरूवणा कायव्वा । एवं भागाभागपरूवणा गदा ।**

अधिक हैं । यहाँ प्रतिभाग पल्योपमका असंख्यातवां भाग है । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानों तक ले जाना चाहिये । इस प्रकार अनन्तरोपनिधा समाप्त हुई ।

परम्परोपनिधासे जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र अध्वान जाकर दुगुणी बृद्धि होती हैं । फिर भी इतना मात्र अध्वान आगे जाकर चतुर्गुणा वृद्धि होती है । इस क्रमसे उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानों तक ले जाना चाहिये । यहां नाना गुणहानिशलाकायें स्तोक हैं । एक गुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है । इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंकी भी श्रेणिप्ररूपणा विपरीत क्रमसे करना चाहिये क्योंकि, उत्कृष्ट स्थितिके विशुद्धि परिणामोंकी अपेक्षा नीचे नीचेकी स्थितियोंके परिणाम विशेष अधिक पाये जाते हैं । इस प्रकार श्रेणिप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अवहारकी प्ररूपणा करते हैं । यथा-समस्त संक्लेशस्थानोंको जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थानोंके प्रमाणसे अपहृत करनेपर वे कितने कालके द्वारा अपहृत होते हैं ? उक्त प्रमाणसे वे असंख्यात कालके द्वारा अपहृत होते हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके संक्लेशस्थानों तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंके भी अवहारका कथन करना चाहिये । अवहारका कथन समाप्त हुआ ।

जघन्य स्थितिके संक्लेशस्थान सब संक्लेशस्थानोंके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? वे सब संक्लेशस्थानोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं । इस प्रकार उत्कृष्ट स्थितिके स्थानों तक ले जाना चाहिये । इसी प्रकार विशुद्धिस्थानोंके भागाभागकी प्ररूपणा करना चाहिये । इस भागाभागप्ररूपणा समाप्त हुई ।

❀ अ-आ-काप्रतिषु ' विसोहिट्ठाणाणि ' इति पाठः ।

संपहि अप्पाबहुअपरूवणाए सुत्तुद्दिट्ठाए विवरणं कस्सामो– सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि । संपहि संकिलेसट्ठाणाणं विसोहिट्ठाणाणं च को भेदो ? परियत्तमाणियाणं✡ साद-थिर-सुभ सुभग-सुस्सर-आदेज्जादीणं सुभपयडीणं बंधकारणभूदकसायुदयट्ठाणाणि विसोहिट्ठाणाणि, असाद अथिर-असुह-दुभग-(दुस्सर) अणादेज्जादीणं परियत्तमाणियाण⊗मसुहपयडीणं बंधकारणकसाउदयट्ठाणाणि संकलेसट्ठाणाणि त्ति एसो तेसिं भेदो। वड्ढमाणकसाओ संकिलेसो, हायमाणो विसोहि त्ति किण्ण घेप्पदे ? ण, संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं संखाए समाणत्तप्पसंगादो । कुदो जहण्णुक्कस्सपरिणामाणं जहाकमेण विसोहि-संकिलेसणियमदंसणादो मज्झिमपरिणामाणं च संकिलेस विसोहिपक्खवुत्तिदंसणादो ण च संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं संखाए समाणत्तमत्थि, संकिलेसट्ठाणेहितो विसोहिट्ठाणाणि णिच्छएण थोवाणि त्ति पवाइज्जमाणगुरूवएसेण सह विरोहादो । उक्कस्स✱ट्ठिदीए विसोहि–

अब सूत्रोद्दिष्ट अल्पबहुत्वकी प्ररूपणाका विवरण करते हैं-- सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश विशुद्धिस्थान सबसे स्तोक हैं ।

शंका-- यहां संक्लेशस्थानों और विशुद्धिस्थानोंमें क्या भेद है ?

समाधान-- साता, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, और आदेय आदिक परिवर्तमान शुभ प्रकृतियोंके बन्धके कारणभूत कषायउदयस्थानोंको विशुद्धिस्थान कहते हैं और असाता, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, (दुस्वर) और अनादेय आदिक परिवर्तमान अशुभ प्रकृतियोंके बन्धके कारणभूत कषायोंके उदयस्थानोंको संक्लेशस्थान कहते हैं, यह उन दोनोंमें भेद है ।

शंका-- बढती हुई कषायको संक्लेश और हीन होती हुई कषायको विशुद्धि क्यों नहीं स्वीकार करते ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, वैसा स्वीकार करनेपर संक्लेशस्थानों और विशुद्धिस्थानोंकी संख्याके समान होनेका प्रसंग आता है । कारण यह कि जघन्य और उत्कृष्ट परिणामोंके क्रमशः विशुद्धि और संक्लेशका नियम देखा जाता है, तथा मध्यम परिणामोंका संक्लेश अथवा विशुद्धिके पक्षमें अस्तित्व देखा जाता है । परन्तु संक्लेश और विशुद्धि स्थानोंमें संख्याकी अपेक्षा समानता है नहीं, क्योंकि, ' संक्लेशस्थानोंकी अपेक्षा विशुद्धिस्थान नियमसे स्तोक हैं ' इस परम्परासे प्राप्त गुरुके उपदेशसे विरोध आता है । अथवा, उत्कृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थान थोडे और जघन्य स्थितिमें वे बहुत

✡ अ-आ-काप्रतिषु ' परियत्तवूणियाणि, ' ताप्रतौ ' परियत्तमाणियाणि ' इति पाठः । सायं थिराइ उच्चं सुर-मणु दो-दो पणिंदि चउरंसं । रिसह-पसत्थविहायगइ सोलस परियत्तसुभवग्गो ।। पं. सं. १, ८१.

⊗ अ-आ-काप्रतिषु ' परियत्तवुणियाण ' इति पाठः । अस्साय थावरदसं नरयदुगं विहगई य अपसत्था । पंचेंदि-रिसभउरंसगेयरा असुभघोलणिया ।' पं. सं. १, ८२.

✱ मप्रतिपाठोऽयम् । अ-आ-काप्रतिषु ' एक्कस्स ' ताप्रतौ ' ए (उ) क्कस्स ' इति पाठः ।

ट्ठाणाणि थोवाणि जहण्णट्ठिदीए बहुवाणि त्ति गुरूवएसादो वा हायमाणकसाउदयट्ठाणाणं विसोहिभावो णत्थि त्ति णव्वदे। सम्मत्तुप्पत्तीए सादद्धाणपरूवणं✿ कादूण पुणो संकिलेस-विसोहीणं परूवणं कुणमाणा वक्खाणाइरिया जाणावेंति जहा हायमाणकसाउदयट्ठाणाणि चेव विसोहिसण्णिदाणि त्ति भणिदे होदु णाम तत्थ तधाभावो, दंसण-चरित्तमोहक्खवणोवसामणासु पुव्विल्लसमए उदयमागद-अणुभागफद्दएहिंतो अणंतगुणहीणफद्दयाणमुदएण जाद☉कसायउदयट्ठाणस्स विसोहित्तब्भुवगमादो। ण च एस णियमो संसारावत्थाए अत्थि, तत्थ छव्विहवड्ढि-हाणीहि कसाउदयट्ठाणाणं उप्पत्तिदंसणादो। संसारावत्थाए वि अंतोमुहुत्तमणंतगुणहीणकमेण अणुभागफद्दयाणं उदओ अत्थि त्ति वुत्ते होदु, तत्थ वि तधाभावं❋ पडुच्च विसोहित्तब्भुवगमादो। ण च एत्थ अणंतगुणहीणफद्दयाणमुदएण उप्पण्णकसाउदयट्ठाणं विसोहि त्ति घेप्पदे, एत्थ एवंविहविवक्खाभावादो◆। किंतु सादबंधपाओग्गकसाउदयट्ठाणाणि विसोही, असादबंधपाओग्गकसाउदयट्ठाणाणि संकिलेसो त्ति घेत्तव्वमण्णहा विसोहिट्ठाणाणमुक्कस्सट्ठिदीए

होते हैं, इस गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि हानिको प्राप्त होनेवाली कषायके उदयस्थानोंके विशुद्धता सम्भव नहीं है।

शंका— सम्यक्त्वोत्पत्तिमें सातावेदनीयके अध्वानकी प्ररूपणा करके पश्चात् संक्लेश व विशुद्धिकी प्ररूपणा करते हुए व्याख्यानाचार्य यह ज्ञापित करते हैं कि हानिको प्राप्त होनेवाले कषायके उदयस्थानोंकी ही विशुद्धि संज्ञा है ?

समाधान— ऐसी आशंका होनेपर उत्तर देते हैं कि वहाँपर वैसा कहना ठीक है, क्योंकि, दर्शन और चारित्र मोहकी क्षपणा व उपशामनामें पूर्व समयमें उदयको प्राप्त हुए अनुभागस्पर्धकोंकी अपेक्षा अनन्तगुणे हीन अनुभागस्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न हुए कषायोदयस्थानके विशुद्धपना स्वीकार किया गया है। परन्तु यह नियम संसारावस्थामें सम्भव नहीं है, क्योंकि, वहाँ छह प्रकारकी वृद्धि व हानियोंसे कषायोदयस्थानकी उत्पत्ति देखी जाती है।

शंका— संसारावस्थामें भी अन्तर्मुहूर्त काल तक अनन्तगुणे हीन क्रमसे अनुभागस्पर्धकोंका उदय है ही ?

समाधान— संसारावस्थामें भी उनका उदय बना रहे, वहाँ भी उक्त स्वरूपका आश्रय करके विशुद्धता स्वीकार की गई है। परन्तु यहाँ अनन्तगुणे हीन स्पर्धकोंके उदयसे उत्पन्न कषायोदयस्थानको विशुद्धि नहीं ग्रहण किया जा सकता है, क्योंकि, यहाँ इस प्रकारकी विवक्षा नहीं है। किन्तु सातावेदनीयके बन्धयोग कषायोदयस्थानोंको विशुद्धि और असातावेदनीयके बन्धयोग्य कषायोदयस्थानोंको संक्लेश ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, इसके बिना उत्कृष्ट स्थितिमें विशुद्धिस्थानोंकी स्तोकताका विरोध है।

✿ प्रतिषु 'सादद्धाणं परूवणं' इति पाठः। ☉ प्रतिषु 'जाव' इति पाठः। ❋ अ-आ-काप्रतिषु 'तत्थाभावं' इति पाठः। ◆ ताप्रतौ 'एवं विधविवक्खाभावादो' इति पाठः।

थोवत्तविरोहादो त्ति । तदो संकिलेसट्ठाणाणि जहण्णट्ठिदिप्पहुडि विसेसाहियवड्ढीए, उक्कस्सट्ठिदिप्पहुडि विसोहिट्ठाणाणि विसेसाहियवड्ढीए गच्छंति (त्ति) विसोहिट्ठाणेहिंतो संकिलेसट्ठाणाणि विसेसाहियाणि त्ति सिद्धं ।

बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि ॥ ५२ ॥

सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि त्ति सुत्तेहि परूविदाणि । तदो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेसविसोहिट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि संखेज्जगुणेहि होदव्वं । तेण असंखेज्जगुणाणि त्ति सुत्तवयणं ण घडदे ? एत्थ परिहारो उच्चदे – जदि सव्वट्ठिदीणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि सरिसाणि चेव होंति तो संखेज्जगुणत्तं जुज्जदे । ण च सव्वट्ठिदिसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं सरिसत्तमत्थि, जहण्णुक्कस्सट्ठिदिप्पहुडि संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणमसंखेज्जभागवड्ढीए गमणुवलंभादो। तेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तं जुज्जदि त्ति घेत्तव्वं (१) ।

अतएव संक्लेशस्थान जघन्य स्थितिसे लेकर उत्तरोत्तर विशेष अधिकके क्रमसे तथा विशुद्धिस्थान उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर विशेष अधिक क्रमसे जाते हैं, इसीलिये विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा संक्लेशस्थान विशेष अधिक हैं, यह सिद्ध होता है ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे हैं ॥ ५२ ॥

शंका-- सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुण हैं, ऐसा सूत्रों (३७-३८) में कहा जा चुका है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धि स्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान संख्यातगुणे होना चाहिये । इसीलिये 'असंखेज्जगुणाणि' यह सूत्रवचन घटित नहीं होता है ?

समाधान-- इस शंकाका परिहार कहते हैं-- यदि सभी स्थितियोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सदृश ही होते, तो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेशविशुद्धिस्थानोंको संख्यातगुणा कहना उचित था । परन्तु सब स्थितियोंके संक्लेशविशुद्धिस्थान सदृश होते नहीं हैं, क्योंकि, जघन्य और उत्कृष्ट स्थितिसे लेकर क्रमशः संक्लेश और विशुद्धि स्थानोंका गमन असंख्यातभागवृद्धिके साथ पाया जाता है । अतएव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंको असंख्यातगुणा कहना उचित है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

---

(१) कथमेवं गम्यते सर्वत्राप्यसंख्येयगुणानि संक्लेशस्थानानीति चेदुच्यते इह सूक्ष्मस्यापर्याप्तस्य

संपहि जदि वि असंखेज्जगुणत्तं बुद्धिमंताणं सिस्साणं सुगमं तो वि मंदमेहावि सिस्साणमणुग्गहट्ठमसंखेज्जगुणत्तसाहणं वत्तइस्सामो। तं जहा– सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणं संदिट्ठीए रचणा कायव्वा। पुणो एदेसिं ट्ठिदिबंधट्ठाणाणं दक्खिणदिसाए बादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणं रचणा कायव्वा। तत्थ बादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणे सुहुमेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणि मोत्तूण सेसहेट्ठिमट्ठिदिबंधट्ठाणाणि सुहुमेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेहिंतो संखेज्जगुणाणि सुहुमेइंदियअपज्जत्तविसोहीदो बादरेइंदियअपज्जत्तविसोहीए अणंतगुणत्तुवलंभादो। उवरिमट्ठिदिबंधट्ठाणाणि तत्तो संखेज्जगुणाणि, सुहुमेइंदियअपज्जत्तउक्कस्ससंकिलेसादो बादरेइंदियअपज्जत्त-उक्कस्ससंकिलेसस्स अणंतगुणत्तुवलंभादो एवं च ट्ठिदट्ठिदिबंधट्ठाणेसु जहण्णट्ठिदिबंधट्ठाणमादिं कादूण जावुक्कस्सट्ठिदिबंधट्ठाणे त्ति ताव पादेक्कमसंखेज्जलोगमेत्तसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं

अब यद्यपि बुद्धिमान् शिष्योंके लिये असंख्यातगुणत्वका जानना सुगम है, तथापि मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहार्थ असंख्यातगुणत्वका साधन कहा जाता है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्ध स्थानोंकी संदृष्टिमें रचना करना चाहिये। पश्चात् इन स्थितिबन्धस्थानोंकी दक्षिण दिशामें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्ध स्थानोंकी रचना करना चाहिये। उनमें बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्ध-स्थानोंमेंसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंको छोडकर अवशिष्ट नीचेके स्थितिबन्धस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्ध स्थानोंसे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विशुद्धिसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी विशुद्धि अनन्तगुणी पायी जाती है। उनसे ऊपरके स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके उत्कृष्ट संक्लेशसे बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकका उत्कृष्ट संक्लेश अनन्तगुणा पाया जाता है। इस प्रकार अवस्थित स्थितिबन्धस्थानोंमें जघन्य स्थितिबन्धस्थानको आदि करके उत्कृष्ट स्थितिबन्धस्थान तक प्रत्येक स्थितिबन्धस्थानके

जघन्यस्थितिबन्धारम्भे यानि संक्लेशस्थानानि तेभ्यः समयाधिकजघन्यस्थितिबन्धारम्भे संक्लेशस्थानानि विशेषाधिकानि। तेभ्योऽपि द्विसमयाधिकजघन्य-स्थितिबन्धारम्भेऽपि विशेषाधिकानि। एवं तावद्वाच्यं यावत्तस्यैवोत्कृष्टा स्थितिः। तदुत्कृष्टस्थितिबन्धारम्भे च संक्लेशस्थानानि जघन्यस्थितिसत्कसंक्लेशस्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि लभ्यन्ते। यदैतदैवं तदा सुतरामपर्याप्तबादरस्य संक्लेशस्थानानि अपर्याप्तसूक्ष्मसत्कसंक्लेशस्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणानि भवन्ति। तथाहि-अपर्याप्तसूक्ष्मसत्कस्थितिस्थानापेक्षया बादरापर्याप्तस्य स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि। स्थितिस्थानवृद्धौ च संक्लेशस्थानवृद्धिः' ततो यदा सूक्ष्मापर्याप्तस्यापि स्थितिस्थानेष्वतिस्तोकेषु जघन्यस्थितिस्थानसत्कसंक्लेशस्थानापेधया उत्कृष्टे स्थितिस्थाने संक्लेशस्थानान्यसंख्येयगुणानि भवन्ति, तदा बादरापर्याप्तस्थितिस्थानेषु सूक्ष्मापर्याप्तस्थितिस्थानापेक्षयाऽसंख्येयगुणेषु सुतरां भवन्ति। क. प्र. (मलय.) १, ६८-६९.

आदीदो पहुडि कमेण विसेसाहियाणमसंखेज्जणाणागुणवड्ढिसलागसहियाणं दुगुणदुगुण-पक्खेवपवेसवसेण अवट्ठिदगुणहाणिपमाणाणं पुध पुध णिव्वग्गणकंडयमेत्तखंडभावं गदाणं रचणा कायव्वा। तत्थ गुणहाणिपमाणमेत्ताणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं बालजणबुद्धिवड्ढावणट्ठमेसा संदिट्ठी—

३२७६८००
१६३८४००
८१९२००
४०९६००
२०४८००
१०२४००
५१२००
२५६००
१२८००
६४००
३२००
१६००
८००
४००
२००
१००

एसा बादरेइंदिय❀अपज्जत्तसंदिट्ठी

२५६०० एसा सुहुमेइंदियअ⊗पज्जत्त-
१२८०० संदिट्ठी

किमट्ठं हेट्ठिमगुणहाणिपरिणामेहिंतो अणंतरउवरिमगुणहाणिपरिणामा दुगुणा? ण एस दोसो, जेण हेट्ठिमगुणहाणिजहण्णट्ठाणपरिणामेहिंतो उवरिमाणंतरगुणहाणिजहण्णपरिणामा दुगुणा बिदियट्ठाणपरिणामेहिंतो उवरिमगुणहाणि-बिदियट्ठाणपरिणामा दुगुणा, तदियट्ठाणपरिणामेहिंतो (उवरिमगुणहाणि) तदियट्ठाणपरिणामा दुगुणा, एवं णेदव्वं जाव दोण्णं गुणहाणीणं चरिमट्ठिदिबंधट्ठाणे त्ति; तेण हेट्ठिमगुणहाणिसव्वसंकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो अणंतर-उवरिमगुणहाणिसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं दुगुणत्तं ण विरुज्झदे।

पढमगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो तदियगुणहाणि-सव्वज्झवसाणपुंजो चउग्गुणो होदि। एत्थ वि कारणं पुव्वं व परूवेदव्वं✲। चउत्थगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजो अट्ठ-गुणो (८)। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। एवं गंतूण जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीयो उवरि गंतूण ट्ठिदगुणहाणीए सव्वज्झवसाणपुंजो

असंख्यात लोक प्रमाण जो संक्लेशविशुद्धिस्थान आदिसे लेकर क्रमशः विशेष अधिक हैं असंख्यात नानागुणवृद्धिशलाकाओंसे सहित हैं, दूने दूने प्रक्षेपके प्रवेशवश अवस्थित गुणहानिके बराबर हैं, तथा पृथक् पृथक् निर्वर्गणाकाण्डक प्रमाण खण्ड भावको प्राप्त हैं; उनकी रचना चाहिये। उनमें गुणहानि प्रमाण मात्र संक्लेशविशुद्धिस्थानोंकी बालजनोंकी बुद्धिके बढानेके हेतु यह संदृष्टि है (मूलमें देखिये)

शंका— अधस्तन गुणहानिके परिणामोंकी अपेक्षा उससे अव्यवहित आगेकी गुण-हानिके परिणाम दूने क्यों हैं ?

⊗ काप्रतौ 'सुहुमेइंदिय' इति पाठः। ❀ काप्रतौ 'बादरेइंदिय' इति पाठः। ✲ मप्रतिपाठोऽयम्। अ-आ-का-प्रतिषु 'पुव्वं परूवेदव्वं' ताप्रतौ 'पुव्वं (व) परूवेदव्वं' इति पाठः।

जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणो, पढमगुणहाणीए एगेगट्ठिदिबंधट्ठाणसंकिलेस-विसोहीहिंतो अप्पिदगुणहाणीए पढमादिट्ठिदिबंधट्ठाणसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं जहाकमेण जहण्ण-परित्तासंखेज्जगुणमेत्तगुणगारुवलंभादो। एवमुवरिं पि जाणिदूण गुणगारो साहेयव्वो। एवं संदिट्ठिं ठविय एदिस्से अवट्ठंभबलेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंकिलेस-विसोहिट्ठाणे-हिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तसंकिलेसविसोहिट्ठाणाणमसंखेज्जगुणत्तं भण्णदे। तं जहा-बादरेइंदियअपज्जत्तणाणागुणहाणिसलागाओ जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणएहि ओवट्टिय लद्धं विरलेदूण णाणागुणहाणिसलागाओ समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणाओ पावेंति। एत्थ चरिमजहण्णपरित्तासंखेज्जच्छेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वसंकिलेस-विसो

समाधान –यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यतः अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी जघन्य स्थानके परिणामोंसे आगेकी अव्यवहित गुणहानिके जघन्य परिणाम दूने हैं, अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी द्वितीय स्थानके परिणामोंकी अपेक्षा आगेकी गुणहानिके द्वितीय स्थान सम्बन्धी परिणाम दूने हैं, अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी तृतीय स्थानके परिणामोंसे अग्रिम गुणहानि सम्बन्धी तृतीय स्थानके परिणाम दूने हैं, इस प्रकार दो गुणहानियोंके अन्तिम स्थितिबन्धस्थान तक ले जाना चाहिए; इसी कारण अधस्तन गुणहानि सम्बन्धी समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा उससे अव्यवहित आगेकी गुणहानि सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके दूने होनेमें कोई विरोध नहीं है।

प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंजसे तृतीय गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज चौगुणा है। यहां भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये। उससे चतुर्थ गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज अठगुणा है। यहां भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये। इस प्रकार जाते हुए जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुण-हानियां आगे जाकर स्थित गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज प्रथम गुणहानि सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंजसे जघन्य परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, प्रथम गुणहानि सम्बन्धी एक एक स्थितिबन्धस्थानके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंसे विवक्षित गुणहानि सम्बन्धी प्रथमादिक स्थितिबन्धस्थानके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका गुणकार क्रमशः जघन्य-परीतासंख्यातगुणा मात्र पाया जाता है। इसी प्रकार आगे भी जानकर गुणकारका कथन करना चाहिये।

इस प्रकार उपर्युक्त संदृष्टिको स्थापित कर उसके आश्रयसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका असंख्यातगुणत्व बतलाया जाता है। यथा- बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानि-शलाकाओंमें जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका भाग देकर जो प्राप्त हो उसका विरलन कर नानागुणहानिशलाकाओंको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य-परीता-संख्यातके अर्धच्छेद प्राप्त होते हैं। यहां जघन्य परीतासंख्यातके अन्तिम अर्धच्छेद प्रमाण गुणहानियोंका समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थानपुंज एक कम विरलन राशिसे गुणित जघन्य

हिट्ठाणपुंजो रूवूणविरलणगुणिदजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तहेट्ठिमगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो असंखेज्जगुणो, विसेसाहियउक्कस्ससंखेज्जगुणगारदंसणादो। कधमेदं णव्वदे ? जुत्तीदो। तं जहा– पढमजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो बिदियजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वट्ठिदि-बंधज्झवसाणट्ठाणाणि जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणाणि, हेट्ठिमपढमादिगुणहाणिअज्झवसा-णपुंजादो उवरिमपढमादिगुणहाणिअज्झवसाणपुंजस्स पुध पुध जहण्णपरित्तासंखेज्ज-गुणत्तुवलंभादो। तदियजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजो पढमजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो जहण्णपरित्ता-संखेज्जवग्गगुणो होदि, जहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणए दुगुणिय विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गुप्पत्तीदो। बिदियजहण्णपरित्तासंखेज्ज-छेदणयमेत्तगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजादो जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणो होदि, हेट्ठिमट्ठिदिपरिणामेहिंतो उवरिमट्ठिदिपरिणामाणं पुध पुध जहण्णपरित्तासंखेज्जगुण-त्तुवलंभादो। पुणो हेट्ठिमदोखंडगुणहाणीणं सव्वज्झवसाणेहिंतो तदियखंडगुण-

---

परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर अधस्तन गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजसे असं-ख्यातगुणा है, क्योंकि, यहाँ गुणकार उत्कृष्ट संख्यातसे विशेष अधिक देखा जाता है।

शंका – यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— वह युक्तिसे जाना जाता है। यथा— जघन्य परीतासंख्यातके प्रथम अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा जघन्य परीतासंख्यातके द्वितीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त स्थितिबन्धाध्यवसानस्थान जघन्य-परीतासंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, अधस्तन प्रथमादि गुणहानियोंके अध्यवसान पुंजकी अपेक्षा आगेकी प्रथमादिक गुणहानियोंका अध्यवसानपुंज पृथक् पृथक् जघन्य परीता-संख्यातगुणा पाया जाता है। जघन्य परीता-संख्यातके तृतीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज जघन्य परीतासंख्यातके प्रथम अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका जो प्रमाण हो उससे गुणित है, क्योंकि, जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेदोंके दुगुणित करनेपर जो प्राप्त हो उसका विरलन करके दूनाकर परस्पर गुणित करनेपर जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग उत्पन्न होता है। जघन्य परीतासंख्यातके द्वितीय अर्धच्छेदके बराबर गुणहानियोंके समस्त अध्यवसानपुंजकी अपेक्षा (जघन्य परीतासंख्यातके तृतीय अर्धच्छद मात्र गुण-हानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज) जघन्य-परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, अधस्तन स्थितियोंके परिणामोंसे उपरिम स्थितियोंके परिणाम पृथक् पृथक् जघन्य-परीतासंख्यात-गुणे पाये जाते हैं। पुनः अधस्तन दो खण्ड सम्बन्धी गुणहानियोंके समस्त अध्यवसान-

हाणीणं सव्वज्झवसाणपुंजो असंखेज्जगुणो होदि, रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जेण जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गे भागे हिदे रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंडेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तरूवुवलंभादो। पुणो पढमखंडसव्व-गुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो चउत्थखंडसव्वज्झवसाणपुंजो जहण्णपरित्तासंखेज-घणगुणो होदि, तिण्णिजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्ण-ब्भत्थे कदे तिप्पदुप्पणजहण्णपरित्तासंखेज्जुवलंभादो। बिदियखंडज्झवसाणेहिंतो जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गगुणो होदि, दुगुणिदजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोब्भत्थे कदे जहण्णपरित्तासंगेज्जवग्गुप्पत्तीदो। तदियखंडज्झव-साणेहिंतो जहण्णपरित्तासंखेज्जगुणो, एगजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीयो उवरि चडिदूण अवट्ठाणादो। हेट्ठिमतिण्णिखंडसव्वगुणहाणिसव्वज्झवसाणपुंजादो उवरिमचउत्थखण्डज्झवसाणपुंजो असंखेज्जगुणो होदि, जहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गेण रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जब्भहिएण जहण्णपरित्तासंखेज्जघणे भागे हिदे एदेण भागहारेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंडेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तरूवुवलंभादो।

स्थानोंसे तृतीय खण्ड सम्बन्धी गुणहानियोंका समस्त अध्यवसानपुंज असंख्यातगुणा है, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातका जघन्य परीतासंख्यातके वर्गमें भाग देनेपर एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे एक अंकको खण्डित करनेपर प्राप्त हुए एक भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक पाये जाते हैं। प्रथम खण्ड सम्बन्धी सब गुणहानि-योंके समस्त अध्यवसानपुंजसे चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी समस्त अध्यवसानपुंज जघन्य परीता-संख्यातका घन करनेपर जो प्राप्त हो उतना गुणा है, क्योंकि, तीन जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणा करनेपर तीन वार उत्पन्न जघन्य परीतासंख्यात अर्थात् उसका घन पाया जाता है। द्वितीय खण्डकी सब गुणहानियोंके परिणामोंकी अपेक्षा चतुर्थ खण्डका सब परिणामपुंज जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उससे गुणित है, क्योंकि, दो जघन्य परीतासंख्यातके दुगुणे अर्धच्छेदोंका विरलन करके द्विगुणित कर परस्पर गुणा करनेपर जघन्य परीतासंख्यातका वर्ग उत्पन्न होता है। तृतीय खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा चतुर्थ खण्डका सव परिणामपुंज जघन्य परीतासंख्यातगुणा है, क्योंकि, एक जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहा-नियाँ ऊपर जाकर उसका अवस्थान है। अधस्तन तीन खण्ड सम्बन्धी समस्त गुणहानि-योंके सव परिणामपुंजकी अपेक्षा आगेका चतुर्थ खण्ड सम्बन्धी परिणामपुंज असंख्यातगुणा है, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे अधिक जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका जघन्य परीतासंख्यातके घनमें भाग देनेपर इस भागहारसे एक अंकको खण्डित करनेपर लब्ध हुए एक खण्डसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक पाये जाते हैं।

एदं पि कधं णव्वदे ? जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गं विरलिय तग्घणं समखंडं करिऊण✡ दिण्णे रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जं पावदि, तत्थ एगेगरूवे गहिदे जहण्ण-परित्तासंखेज्जवग्गमेत्तरूवोवलद्धी होदि, ताणि रूवाणि पासे विरलिदजहण्णपरित्ता-संखेज्जयस्स समखंडं कादूण दिण्णेसु रूवं पडि जहण्णपरित्तासंखेज्जं पावदि, पुणो तत्थ रूवधरिदं पडि एगेगरूवे गहिदे जहण्णपरित्तासंखेज्जं उप्पज्जदि, पुणो तत्थ एगरूवमवणिय पासे विरलिदएगरूवस्स दिण्णे उक्कस्ससंखेज्जं पावदि, पुणो अव-णिदएगरूवं एदीए विरलणाए खंडेदूण तत्थ एगेगखंडे रूवं पडि दिण्णे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जगुणगारो होदि, तेण णव्वदे ।

संपहि पढमखंडज्झवसाणेहिंतो पंचमखंडज्झवसाणा जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गवग्गेण गुणिदमेत्ता होंति, चत्तारिजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे चदुण्णं जहण्णपरित्तासंखेज्जाणमण्णोण्णब्भत्थरासिसमुप्प-त्तीदो । एवं सेसखंडाणं पि पुव्वं व गुणगारो साहेयव्वो । संपहि चदुखंडसव्वज्झवसाणे-

---

शंका—यह भी कैसे जाना जाता है ?

समाधान—जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका विरलन कर उसके घनको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यात पाया जाता है। उन विरलित अंकोंमेंसे एक एक अंकके प्रति प्राप्त राशियोंमेंसे एक एक अंकको ग्रहण करने पर जघन्य परीतासंख्यातके वर्ग प्रमाण अंक पाये जाते हैं। उन अंकोंको पासमें विरलित जघन्य परीतासंख्यातके प्रति समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति जघन्य परीतासंख्यात पाया जाता है। फिर उनमेंसे एक एक अंकके ऊपर रखी हुई प्रत्येक राशिमेंसे एक एक रूपके ग्रहण करनेपर जघन्य परीतासंख्यात उत्पन्न होता है। पुनः उनमेंसे एक अंकको कम कर पासमें विरलित एक रूपके प्रति देनेपर उत्कृष्ट संख्यात प्राप्त होता है। पश्चात् कम किये गये एक अंकको इस विरलन राशिसे खण्डित कर उनमेंसे एक एक खण्डको प्रत्येक अंकके प्रति देनेपर एक रूपके असंख्यातवें भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात गुणाकार होता है। इसीसे वह जाना जाता है।

प्रथम खण्डके परिणामोंकी अपेक्षा पंचम खण्डके परिणाम जघन्य परीतासंख्यातके वर्गका वर्ग करनेपर जो प्राप्त हो उतने गुणे हैं, क्योंकि, चार जघन्य परीता-संख्यातोंके अर्धच्छेदोंको विरलित कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर चार जघन्य परीतासंख्यातोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशि उत्पन्न होती है। इसी प्रकार शेष खण्डोंके भी गुणकारका कथन पहिलेके ही समान करना चाहिये।

✡ अ-आ-काप्रतिषु 'करियअण' इति पाठः । 'काऊण' इत्यपि पाठः ।

हिंतो पंचमखंडसव्वज्झवसाणट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि, जहण्णपरित्तासंखेज्जघणेण रूवाहियजहण्णपरित्तासंखेज्जसहिदजहण्णपरित्तासंखेज्जवग्गब्भहिएण जहण्णपरित्तासंखेज्जयस्स वग्गवग्गे भागे हिदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तरूवुवलंभादो। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । एवमुवरिमसव्वखंडेसु एगरूवस्स असंखेज्जदिभागेणब्भहियउक्कस्ससंखेज्जमेत्तो गुणगारो वत्तव्वो । कुदो ? पुव्विल्लपरूवणाए उवरिमत्थपरूवणं पडि बीजीभूदत्तादो । उवरिमगुणगारो अण्णहा किण्ण जायदे ? ण, गुणहाणिअज्झवसाणट्ठाणाणं दुगुणत्तण्णहाणुववत्तीदो । तेण हेट्ठिमसव्वखण्डज्झवसाणेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स चरिमखंडज्झवसाणट्ठाणाणि णिच्छएण असंखेज्जगुणाणि होंति त्ति सद्दहेदव्वं । उक्कस्ससंखेज्जादो सादिरेयस्स जहण्णपरित्तासंखेज्जादो किंचूणस्स एदस्स गुणगारस्स कधमसंखेज्जत्तं जुज्जदे ? ण, उक्कस्ससंखेज्जमदिक्कंतस्स तदविरोहादो । दुगुणजहण्णपरित्तासंखेज्जछेदणयमेत्तगुणहाणीहि एगेगखंडपमाणं काढूण वा असंखेज्जगुणत्तं साधेदव्वं । बादरेइंदियअपज्जत्तयट्ठिदिबंधट्ठाणाणामसंखेज्जभागाणं संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहिंतो जदि उवरिमअसं-

---

चार खण्डोंके समस्त परिणामोंकी अपेक्षा पांचवें खण्डके सब परिणाम असंख्यातगुणे हैं, क्योंकि, एक अधिक जघन्य परीतासंख्यातसे सहित जघन्य परीतासंख्यातका जो वर्ग है उससे अधिक जघन्य परीतासंख्यातके घनका जघन्य परीतासंख्यातके वर्गके वर्गमें भाग देनेपर एक अंकके असंख्यातवें भागके साथ उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण अंक प्राप्त होते हैं। यहाँपर भी पहिलेके ही समान कारण बतलाना चाहिये। इसी प्रकार आगेके सब खण्डोंमें एक अंकके असंख्यातवें भागसे अधिक उत्कृष्ट संख्यात प्रमाण गुणकार जानना चाहिये, क्योंकि, आगेकी अर्थ-प्ररूपणाके प्रति पहिलेकी प्ररूपणा बीजभूत है।

शंका-- आगेका गुणकार अन्य प्रकार क्यों नहीं होता है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, इसके बिना गुणहानियोंके अध्यवसानस्थान दुगुणे बन नहीं सकते।

इसीलिये अधस्तन सब खण्डोंके अध्यवसानस्थानोंकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके अन्तिम खण्ड सम्बन्धी अध्यवसानस्थान निश्चयसे असंख्यातगुणे हैं, ऐसा श्रद्धान करना चाहिये।

शंका-- उत्कृष्ट संख्यातसे साधिक और जघन्य परीतासंख्यातसे कुछ कम इस गुणकारको 'असंख्यात' कहना कैसे उचित है ?

समाधान-- नहीं, क्योंकि, उत्कृष्ट संख्यातका अतिक्रमण कर जो कोई भी संख्या हो उसे 'असंख्यात' कहनेमें कोई विरोध नहीं। अथवा, दूने जघन्य परीतासंख्यातके अर्धच्छेदोंके बराबर गुणहानियोंके द्वारा एक एक खण्ड प्रमाण करके असंख्यातगुणत्वको सिद्ध करना चाहिये। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त सम्बन्धी स्थितिबन्धस्थानोंके असंख्यात

खेज्जदिभागस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि होंति तो सुहुमेइंदिय-अपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणेसु बादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणं संखेज्जदिभागेसु जाणि संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि तेहिंतो बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वसंकिलेस-विसोहि-ट्ठाणाणि णिच्छएण असंखेज्जगुणाणि होंति त्ति साहेदव्वं। अधवा अण्णेण ⊗ पयारेण गुणगारो उच्चदे। तं जहा- सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधट्ठाणादो हेट्ठिमबादरे-इंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणगयसंकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं णाणागुणहाणिसलागाओ विर-लिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे जो रासी उप्पज्जदि तेण पढमगुणहाणिदव्वे (१००) गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स पढमगुणहाणिदव्वं होदि। पुणो एदम्मि ❁ सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ (२) ✱ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण रूवमवणिय सेसेण गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदम्मि चेव पढमगुणहाणिदव्वे (१००) बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ (१६) विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण रूवमवणिय (६५५३५) सेसेण गुणिदे बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदेसु सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि भागे हिदेसु पलिदोवमस्स

बहुभाग मात्र स्थानोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी अपेक्षा यदि ऊपरके असंख्यातवें भाग मात्र स्थानोंके संक्लेश-विशुद्धिस्थान असंख्यातगुणे होते हैं, तो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थिति-बन्धस्थानोंके संख्यातवें भागमात्र सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके स्थितिबन्धस्थानोंमे जो संक्लेश-विशुद्धिस्थान है उनकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके समस्त संक्लेश-विशुद्धिस्थान निश्चयसे असंख्यातगुणे होते हैं, ऐसा सिद्ध करना चाहिये।

अथवा अन्य प्रकारसे गुणकारका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है- सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धस्थानकी अपेक्षा नीचेके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंकी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है उससे प्रथम गुण-हानिके द्रव्य (१००) को गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी प्रथम गुणहानिका द्रव्य होता है। पश्चात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी नानागुणहानिशलाकाओं (२) का विरलन करके दूनाकर परस्पर गुणा करनेपर जो प्राप्त हो उसमेंसे एक अक कम कर अवशिष्ट राशि (३) से उपर्युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी प्रथम गुणहानिके द्रव्यको गुणित करनेपर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं (१२८००×३ = ३८४००)। पश्चात् बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकी नानागुणहानिशलाकाओं (१६) का विरलन कर दुगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर जो (६५५३६) प्राप्त हो उसमेंसे एक अंक कम करके अवशिष्ट राशि (६५५३५) से इसी प्रथम गुणहानि सम्बन्धी द्रव्यको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं (६५५३५×१०० = ६५५३५००)। इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका

⊗ ताप्रतौ 'अण्णेण' इति पाठः। ❁ अ-आ-काप्रतिषु 'एगम्मि', ताप्रतौ 'एग (द) म्मि' इति पाठः। ✱ प्रतिषु (३) इति पाठः।

असंखेज्जदिभागो गुणगारो आगच्छदि बादराणमुवरिमगुणहाणिसलागाणं किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासिं सुहुमअण्णोण्णब्भत्थरासिणा गुणिय ताए चेव रूवूणाए ओवट्टिदपमाणत्तादो। एदेण गुणगारेण सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेसु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। अधवा सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स ट्ठिदिबंधट्ठाणपमाणेण सुहुमेइंदियजहण्णट्ठिदिबंधट्ठाणपमाणबादरेइंदियअपज्जत्तट्ठिदिबंधट्ठाणप्पहुडि उवरिमट्ठाणेसु कदेसु संखेज्जगुणाणि हवंति। संपहि तत्थ पढमखंडस्स संकिलेस विसोहिट्ठाणाणि सुहुमेइंदिअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणमेत्ताणि होंति। एदासिमेगा गुणगारसलागा (१)। पुणो सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स अण्णोण्णब्भत्थरासिणा (४) सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेसु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स बिदियखंडसंकिलेस विसोहिट्ठाणाणि हवंति। पुणो एदस्स वग्गेण गुणिदेसु तदियखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदस्स घणेण गुणिदेसु चउत्थखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। पुणो एदस्स वग्गवग्गेण गुणिदेसु पंचमखंडस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति। एवं णेदव्वं जाव चरिमखंडे त्ति। सुहुमेइंदियअपज्जत्तजहण्णट्ठिदिबंधट्ठाणादो हेट्ठिमाणं बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणं एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो गुणगारो होदि, तेसिं सुहुमेइंदियअपज्जत्तसंकिलेसट्ठाणाणमसंखेज्जदिभागत्तादो। एदाओ सव्वगुणगारसलागाओ

भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार प्राप्त होता है, क्योंकि उसका प्रमाण बादर जीवोंकी उपरिम गुणहानिशलाकाओंकी कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशिको सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिसे गुणित करके एक अंकसे कम उसीके द्वारा अपवर्तित करनेसे जो प्राप्त हो उतने मात्र है। इस गुणकारसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेशविशुद्धिस्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके संक्लेशविशुद्धिस्थान होते हैं।

अथवा, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके जघन्य स्थितिबन्धस्थानोंके बराबर जो बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थान हैं उनको आदि लेकर ऊपरके स्थानोंको सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तके स्थितिबन्धस्थानोंके प्रमाणसे करनेपर वे संख्यातगुणे होते हैं। अब उनमें जो प्रथम खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेशविशुद्धिस्थानोंके बराबर हैं, इनकी एक (१) गुणकारशलाका है। पुनः सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी अन्योन्याभ्यस्त राशि (४) से सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके द्वितीय खण्ड सम्बन्धी संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। पश्चात् उनको इसके वर्गसे गुणित करनेपर तृतीय खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। फिर इनके घनसे उनको गुणित करनेपर चतुर्थ खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। इसके वर्गके वर्गसे उनको गुणित करनेपर पांचवे खण्डके संक्लेश-विशुद्धिस्थान होते हैं। इस प्रकार अन्तिम खण्ड तक ले जाना चाहिये। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके जघन्य स्थितिबन्ध स्थानसे नीचेके बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका गुणकार एक अंकका असंख्यातवां भाग होता है, क्योंकि, वे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इन

मेलाविय सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेसु गुणिदेसु बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणाणि होंति । पुणो एदेसु सुहुमेइंदियअपज्जत्तयस्स संकिलेस-विसोहिट्ठाणेहि ओवट्टिदेसु गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि ।

एदेसिं गुणगाराणं मेलावणविहाणं संदिट्ठिमवलंबिय उच्चदे । तं जहा – सुहुमेइंदिय अपज्जत्तयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थं कादूण रूवे अवणिदे एत्तियं होदि (३) । पुणो एदेण अण्णोण्णब्भत्थरासिणा सुहुमउवरिमबादरणाणागुणहाणिसलागाओ (७) विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थरासिम्हि भागे हिदे भागलद्धमेत्तियं होदि (१२८।३) पुणो लद्धे एदम्हि (१२८) सरिसच्छेदं करिय पक्खित्ते एत्तियं होदि (५१२।३)☼ । पुणो एदेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सुहुमेइंदियसव्वज्झवसाणट्ठाणेसु (३८४००) गुणिदेसु बादरअपज्जत्तज्झवसाणट्ठाणाणि पढमगुणहाणिअज्झजवसाणमेत्तेण अहियाणि होंति (६५५३६००) । पुणो एत्तियमेत्तेण (१००) हाइदूण इच्छामो त्ति बादरेइंदियअपज्जत्तयस्स सव्वणाणागुणहाणिसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे एत्तियं होदि । तं च एदं (६५५३६) । पुणो एदेण पढमगुणहाणिदव्वे गुणिदे पढमगुणहाणिअज्झवसाणाहियसव्वज्झवसाण✿पमाणं होदि । तं च एदं (६५५३६००) ।

सब गुणकारशलाकाओंको मिलाकर उससे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंको गुणित करनेपर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश विशुद्धिस्थान होते हैं। अब इनमें सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकके संक्लेश-विशुद्धिस्थानोंका भाग देनेपर पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार प्राप्त होता है ।

अब संदृष्टिका आश्रय करके इन गुणकारोंके मिलानेके विधानको कहते हैं । वह इस प्रकार है-- सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी नानागुणहानिशलाकाओंका विरलन करके दुगुणाकर परस्पर गुणा करके जो राशि प्राप्त हो उसमेंसे एक कम करनेपर इतना होता है-- $\frac{२}{१} \times \frac{२}{१} = ४$; $४ - १ = ३$ । अब सूक्ष्म जीवकी अपेक्षा बादर जीवकी आगेकी नानागुणहानिशलाकाओं (१० से १६ तक ७) का विरलनकर दूना करके परस्पर गुणा करनेपर जो राशि प्राप्त हो उसमें उक्त अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग देनेपर लब्ध इतना होता है-- $\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१}\times\frac{२}{१} = २$; $१२८ \div ३ = \frac{१२८}{३}$ । इस लब्ध राशिमें इस (१२८) को समच्छेद करके मिलानेपर इतना होता है- $१२८ = \frac{३८४}{३}$; $\frac{३८४}{३} + \frac{१२८}{३} = \frac{५१२}{३}$ । इस पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र उस राशिके सूक्ष्म एकेन्द्रियके समस्त अध्यवसानोंको गुणित करनेपर बादर अपर्याप्तकके अध्यवसान प्रथम गुणहानिके अध्यवसानस्थानोंसे अधिक होते हैं-- $\frac{३८४००}{३} \times \frac{५१२}{३} = ६५५३६००$ । अब चूंकि ये इतने (१००) मात्रसे हीन अभीष्ट हैं, अतएव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तककी समस्त (१६) गुणहानिशलाकाओंका विरलन कर द्विगुणा करके परस्पर गुणा करनेपर इतना होता है । वह यह है-- ६५५३६ । इससे प्रथम

☼ प्रतिषु (५१२) इति पाठः । ✿ प्रतिषु 'सव्वज्झवसाय' इति पाठः ।